

जी.एम.एन. कालेज में हुआ रक्तदान शिविर का आयोजन

अम्बाला, 15 फरवरी (बलराम): छावनी स्थित गांधी मैमोरियल नेशनल



रक्तदान शिविर के दौरान मुख्य अतिथि को स्मृतिचिन्ह भेंट करते प्राचार्य एवं प्रबंधक समिति के पदाधिकारी।
(चंद्रमोहन)



रक्तदान शिविर के दौरान एक रक्तदात्री का उत्साहवर्धन करते मुख्य अतिथि एवं अन्य गण्यमान्य व्यक्ति।
(चंद्रमोहन)

कालेज में प्राचार्य डा. रोहित दत्त की अध्यक्षता एवं यूथ रेडक्रॉस सोसायटी के प्रभारी राकेश कुमार के नेतृत्व में एन.सी.सी., एन.एस.एस., महिला प्रकोष्ठ, नमीषा फाऊंडेशन ट्रस्ट, डॉप्स ऑफ चेंज एवं ओस्का के संयुक्त तत्वावधान में वीरवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सी.जे.एम. सौरभ गुप्ता, विशेष अतिथि इंडियन यूथ रेडक्रॉस सोसायटी के महासचिव डा. मुकेश अग्रवाल, विशिष्ट अतिथि सोसायटी के स्टेट को-आर्डिनेटर डा. रोहित शर्मा, पी.एम.ओ. डा. राकेश शर्मा, जिला रेडक्रॉस सोसायटी की सचिव सुषमा एवं जिला संयोजक मनोज कुमार के अलावा जी.एम.एन. कालेज के प्राचार्य डा. रोहित दत्त, कालेज गर्वनिंग बोर्डी के उपाध्यक्ष के.जे.एस. बल्हारा और कोषाध्यक्ष आलोक गुप्ता ने रक्तदानियों का उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. राकेश कुमार ने बताया कि शिविर में स्वयंसेवकों के साथ-साथ कालेज के विद्यार्थियों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया और लगभग 100 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।

अपने संबोधन में सौरभ गुप्ता ने कहा कि रक्तदान की मुहिम को आगे बढ़ाने में युवाओं को अपनी अहम भूमिका निभानी होगी।

डा. मुकेश अग्रवाल ने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों के तहत भारत में सालाना एक करोड़ यूनिट रक्त की जरूरत है, लेकिन उपलब्ध 70 लाख यूनिट ही हो पाता है यानी करीब 30 लाख यूनिट रक्त के अभाव में हर साल सैंकड़ों मरीज दम तोड़ देते हैं।

राजधानी नई दिल्ली में आंकड़ों के मुताबिक यहां हर साल 350 लाख रक्त यूनिट की आवश्यकता रहती है, लेकिन स्वैच्छिक रक्तदाताओं से 30 फीसदी रक्त ही जुट पाता है। इसलिए हम सबको रक्तदान करने के लिए आगे आना होगा, क्योंकि आपका एक यूनिट रक्त कई लोगों की जिंदगी बचा सकता है।

प्राचार्य डा. रोहित दत्त ने कहा कि रक्तदान के माध्यम से रक्त कोशिकाओं में आयरन को कम करके हार्ट स्ट्रोक के खतरे को कम किया जा सकता है। शोध में कहा गया है कि अगर 43 से 61 वर्ष की आयु के व्यक्ति हर 6 माह में रक्तदान करें तो उनके दिल का दौरा पड़ने की आशंका बहुत हद तक कम हो जाती है। इसके साथ ही लगातार रक्तदान से लीवर, फेफड़े, क्लोन और गले के कैंसर के खतरे को भी कम किया जा सकता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि शरीर में जमा आयरन स्वस्थ स्तर पर बना रहता है।